सं. म्रो. वि./एफ.डी./90-86/25890.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. के-स्ट्रीट लाईट इलैक्ट्रीक कारभोरेशन, एन.ग्राई.टो., फरीदाबाद, के श्रमिक श्रो जिलेदार, पुत्र श्री विजय सिंह, मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौंक, फरीदाबाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुये अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त अधिसूचना का धारा 1 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाधाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है :---

क्या श्री जिलेदार की सेवाभ्रों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं० म्रो०वि०/एफ०डी०/32-86/25897.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० हरियाणा इस्पात प्रा० लि०, प्लाट नं० 81, सैक्टर 25, फरीदाबाद, कं श्रमिक श्री महेन्द्र सिंह, पुत्र श्री ग्रोमकार सिंह, मकान नं० 485, श्याम कालोनी-चावला कालोनी, बल्लवगढ़, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रोद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-श्रम 68/15254, दिनांक 20 जूत, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को दिवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवाद-श्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री महेन्द्र सिंह, की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संव मोवित /एफ वीव / 38-86 / 25904 -- चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. कीनत पेपर मिल, पैकेंजिंग डिविजन, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री श्रीराम, मार्फत श्री श्रार. एलव शर्मा, 1-कें / 16 एन. आई. टी. फरीदाबाद, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिणंय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रंब, ग्रौद्धोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढते हुए ग्रिधिसूचना सं० 11495—जी—श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री श्रीराम, पुत्र श्री सीता राम की सेवा समाप्त की गई है या वह स्वयं गैर-हाजिर हो रहा है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं बो विव /एफ.डी./87-86/25911.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं एक्को इण्डस्ट्रीज, प्लाट नं 210, सैक्टर 24, फरीदावाद के श्रमिक श्री सुबोत प्रसाद, मार्फत श्री ग्रमर सिंह शर्मा, लेवर यूनियन ग्राफिस, ग्रपोदाट गवर्नमैंट गर्ल्ज मिडल स्कूल नं 1, एन ब्याई०टी०, फरीदावाद तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक विवाद हैं;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रीसोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का श्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978, के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनते अधिसूचना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला यायिनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा संबधित मामला है :--

क्या श्री सुबोत प्रसाद की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठींक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत की हकदार है ?